

भारतीय पारंपरिक वस्त्रों में प्रतीको व रूपांकनो का महत्व

प्रियंका यादव

शोध छात्रा, चित्रकला विभाग, दृश्य कला संकाय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी

सारांश :

भारत में धर्म, भूगोल, जलवायु और क्षेत्र की सांस्कृतिक परंपराओं के आधार पर भिन्न-भिन्न प्रकार के वस्त्र धारण किये जाते हैं। वस्त्र अपने अविस्मरणीय रंगों, जटिल डिजाइनों, लोक परंपराओं के कारण अद्वितीय बन गए हैं। डिजाइन अक्सर एक बीते युग की विभिन्न शैलियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। भारतीय कारीगरों ने हमेशा पैटर्न में रूपांकनों के बीच की जगह के उचित उपयोग पर गंभीरता से विचार किया है। भारतीय वस्त्र कला मानव प्रयास के इतिहास में एक अनूठा अध्याय है। प्रत्येक रूपांकन का एक विशेष अर्थ होता है और इसे किसी विशिष्ट उद्देश्य को ध्यान में रखकर बनाया जाता है। अच्छी कलाकृति, चाहे वह पेंटिंग हो, मूर्तिकला हो या कपड़े, सभी डिजाइन से शुरू होती है। इस शोध पत्र के माध्यम से भारतीय पारंपरिक वस्त्रों में प्रयोग किये जाने वाले प्रतीको व रूपांकनो का क्या महत्व है। इनका प्रयोग करके किन-किन प्रकार के वस्त्र बनाये जाते हैं इनका अध्ययन किया गया है। वस्त्रों में अनेक प्रकार के नमूने बनाये जाते हैं। इन्हें 'मोटिफ' कहते हैं। कुछ प्रमुख परम्परागत मोटिफ जो आज भी अपनी पहचान बनाए हुए हैं, जैसे बूटी, बूटा, कोनिया, बेल, जाल और जंगला, झालर आदि। यह शोध पत्र विशेष रूप से पारम्परिक साड़ीयो व रूपांकनो पर चर्चा करता है। साथ ही साथ रूपांकनो के इतिहास व वर्तमान बदलावों को भी उजागर करता है।

बीज शब्द : परम्परिक, प्रतीक, रूपांकन, आकृतियाँ, शिकारगाह, कोनिया

प्रस्तावना :

प्रतीको व रूपांकनो की उत्पत्ति सिंधु घाटी सभ्यता से देखी जा सकती है, भारतीय महाकाव्यों रामायण और महाभारत में इसके शामिल होने का प्रमाण मिलता है।^[1] ये वस्त्र दुनिया भर में व्यापक रूप से पहनी जाती है और इसे दुनिया में वस्त्रों की सबसे पुरानी शैलियों में से एक माना जाता है। पारंपरिक भारतीय वस्त्रों में बुने जाने वाले वस्त्रों का एक प्रमुख हिस्सा मोटिफ हैं। जो सिल्क के रंगीन गोल्ड और सिल्वर धागे से बुने जाते थे। मुगलों की कला में पैस्ले एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और लतीफा बूटी मुगल प्रभाव की प्रमुख उदाहरण हैं।^[2] इन रूपांकनो का प्रयोग अनेको प्रकार के वस्त्रों को बनाने में किया गया, जिसमें साड़ी की प्रमुख भूमिका है पारंपरिक भारतीय परिधान का सबसे प्रसिद्ध टुकड़ा है, और इसे न केवल भारत में बल्कि दुनिया भर की महिलाओं द्वारा पहना जाता है। साड़ी का जटिल डिजाइन ही इसे सांस्कृतिक महत्व देता है। साड़ी महिलाओं की पहचान और सम्मान का प्रतीक है।

भारतीय संस्कृति में साड़ी को महिलाओं की गंभीरता, गरिमा, गौरव, और परंपरा का प्रतीक माना जाता, जो उनकी प्रतिष्ठा और सम्मान को बढ़ाती है और उन्हें शक्ति और सुंदरता के प्रतीक के रूप में प्रदर्शित करती है। वे भारतीय कारीगरों द्वारा डिजाइन के विकास के बारे में संकेत देते हैं। वस्त्र के लिए एक बेहतर मोटिफ का चयन महत्वपूर्ण है। वस्त्रों को बनाने से पहले बुनकर, पैटर्न के उचित उपयोग पर गंभीरता से विचार करते हैं। मोटिफ के बीच सामंजस्य बनाए रखने के लिए, कुछ ज्यामितीय पैटर्न का उपयोग किया जाता है, जिनमें सबसे आम हैं- खंजरी (शेवरॉन), चारखाना (चेक) आदि। पुष्प रूपांकनों को अत्यधिक शुभ माना जाता है और एक सरल दृष्टिकोण के साथ प्रस्तावित किया जाता है,[3] जिससे सभी क्षेत्रों के लोग आकर्षित होते हैं। इन पुष्प रूपों को उनके आकार के आधार पर बूटी या बूटा कहा जाता है। बूटी एक एकल फूल या आकृति है जिसे अलग से बनाया जाता है। कुछ लोकप्रिय उदाहरण हैं- पान (सुपारी), फरदी/माखी (प्रभाव बिन्दुओं द्वारा उत्पन्न होता है), पैस्ले (आम), तारा (तारा), अशरफी (गोलाकार, सिक्के के आकार का) इत्यादि। फूलों के नाम वाली बूटियाँ फूल बूटियाँ, गुलदाउदी, गेंदा और गुलाब कहलाती हैं। बूटी में इस्तेमाल की जाने वाली पंखुड़ियों की संख्या भी इसे अपना नाम देती है, जैसे तिनपतिया/कंगुरा (तीन पंखुड़ी), पंचपतिया (पांच पंखुड़ी), सतपतिया (सात पंखुड़ी)। अगर इन बूटियों को बेल (लता पैटर्न) में बुना जाता है, तो इसे गेंदा बेल, गुलदाउदी बेल, गुलाब बेल इत्यादि कहा जाता है।[4] लेआउट किसी भी कपड़े की दृश्य उपस्थिति का सबसे महत्वपूर्ण घटक है। साड़ियों के लोकप्रिय लेआउट पैटर्न हैं- अधा (विकर्ण), जाल/जंगला (समग्र पैटर्न) आदि।

प्रतीक व रूपांकन

साड़ियाँ अपनी उत्कृष्ट शिल्प कौशल और जटिल डिजाइन के लिए प्रसिद्ध हैं। इन खूबसूरत साड़ियों के केंद्र में प्रतीकवाद और रूपांकनों की एक समृद्ध टेपेस्ट्री निहित है, जिनमें से प्रत्येक का अपना महत्व और कहानी है। ये साड़ियाँ सिर्फ परिधान नहीं हैं, वे प्रतीकवाद और कलात्मकता के भंडार हैं।[5] इन साड़ियों को सजाने वाले रूपांकन गहरे अर्थ रखते हैं और प्रेम, समृद्धि, आध्यात्मिकता और अनुग्रह का संदेश देते हैं। मोर से लेकर कमल तक, प्रत्येक रूपांकन एक कहानी कहता है और पहनने वाले के लिए महत्व की परतें जोड़ता है। साड़ी पहनकर, कोई न केवल खुद को शाश्वत सुंदरता से सजाता है, बल्कि कपड़े के भीतर अंतर्निहित सांस्कृतिक विरासत और प्रतीकात्मक भाषा को भी अपनाता है। साड़ियों के रूपांकन सूक्ष्म शिल्प कौशल और भारतीय संस्कृति की समृद्ध टेपेस्ट्री का प्रमाण हैं।

मोर की आकृति:

साड़ियों में मोर की आकृति का विशेष स्थान है। मोर, जो अपनी सुंदरता और अनुग्रह के लिए जाना जाता है, प्रेम, निष्ठा और अमरता का प्रतीक है। जिन्हें अक्सर अन्य प्राकृतिक तत्वों के साथ बुना जाता है। यह दिव्य सौंदर्य का प्रतिनिधित्व करता है और हिंदू देवता भगवान कृष्ण से जुड़ा हुआ है।[6] मोर की आकृति अक्सर साड़ी के पल्लू (अंतिम भाग) में देखी जाती है, जो शाश्वत प्रेम और शुभता का प्रतीक है।



चित्र संख्या : 1 मोर की आकृति

कमल आकृति:

भारतीय संस्कृति में कमल की आकृति का गहरा आध्यात्मिक महत्व है। यह पवित्रता, सुंदरता और ज्ञानोदय का प्रतीक है। कमल विभिन्न देवताओं से जुड़ा है और पवित्र माना जाता है। इन साड़ियों में, कमल की आकृति हृदय और मस्तिष्क की पवित्रता का प्रतिनिधित्व करती है, और इसकी उपस्थिति समग्र डिजाइन में अनुग्रह और शांति की भावना जोड़ती है।[7]



चित्र संख्या : 2 कमल आकृति

कलश आकृति:

कलश की आकृति, जिसके शीर्ष पर नारियल रखा हुआ दर्शाया गया है, जो शुभता और प्रचुरता का प्रतीक है। यह विशेष अवसरों के लिए लोकप्रिय रूपांकन है। यह अक्सर परम्परिक साड़ियों में देखा जाता है, खासकर शादी और उत्सव के संग्रह में। कलश की आकृति समृद्धि, उर्वरता और आशीर्वाद का प्रतिनिधित्व करती है। यह जीवन के उत्सवों की पवित्रता और प्रचुरता और कल्याण के महत्व की याद दिलाता है।



चित्र संख्या: 3 कलश आकृति

हंस आकृति:

हंस की आकृति परम्परिक साड़ियों में पाया जाने वाला एक और महत्वपूर्ण प्रतीक है। हंस, जिसे संस्कृत में हम्सा के नाम से जाना जाता है, अनुग्रह, पवित्रता और सुंदरता से जुड़ा है। ऐसा माना जाता है कि इसमें दूध से पानी को अलग करने की क्षमता होती है, जो अच्छे और बुरे के बीच अंतर करने की क्षमता का प्रतीक है। साड़ियों में हंस की आकृति सुंदरता, विवेक और आंतरिक ज्ञान का प्रतिनिधित्व करती है।



चित्र संख्या : 4 हंस आकृति

ज्यामितीय आकृतियाँ:

साड़ियों में विभिन्न प्रकार के ज्यामितीय रूपांकन भी होते हैं, जैसे चेक, धारियाँ और पुष्प पैटर्न। ये रूपांकन व्यवस्था, संतुलन और सामंजस्य का प्रतीक हैं। साड़ियों में ज्यामितीय डिज़ाइन पारंपरिक शिल्प कौशल का सम्मान करते हुए एक समकालीन स्पर्श जोड़ते हैं। वे कालातीत लालित्य के साथ आधुनिक सौंदर्यशास्त्र के सही मिश्रण का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये जटिल पैटर्न साड़ियों में राजसीता और सटीकता का स्पर्श जोड़ते हैं। इन्हें अक्सर अन्य रूपांकनों के साथ संयोजन में उपयोग किया जाता है।



चित्र संख्या : 5 ज्यामितीय आकृतियाँ

पशु रूपांकनः

भारतीय वस्त्रों में अक्सर हाथी, मोर और तोते जैसे जानवरों के रूपांकन होते हैं। ये रूपांकन विभिन्न गुणों और विशेषताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। हाथी शक्ति, बुद्धि और सौभाग्य का प्रतीक हैं। मोर सुंदरता, अनुग्रह और दिव्यता का प्रतीक हैं। तोते प्यार, निष्ठा और संचार का प्रतीक हैं। पशु रूपांकनों की उपस्थिति साड़ी में प्रतीकात्मकता और कहानी कहने का स्पर्श जोड़ती है, जिससे यह सिर्फ कपड़े के एक टुकड़े से कहीं अधिक बन जाती है।



चित्र संख्या: 6 पशु रूपांकन

पुष्प आकृतियाँ:

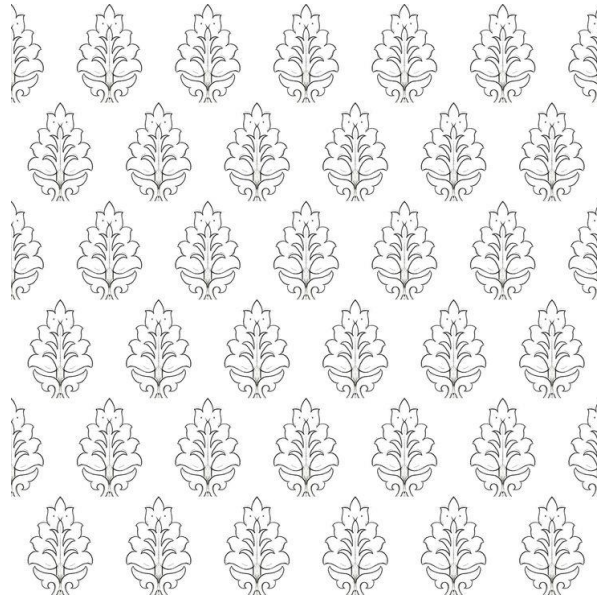
वस्त्रों में पुष्प रूपांकन सर्वव्यापी हैं, और प्रत्येक फूल का अपना प्रतीक होता है। गुलाब प्यार और जुनून का प्रतीक है। चमेली पवित्रता और कामुकता का प्रतिनिधित्व करती है। कमल पवित्रता और आत्मज्ञान का प्रतीक है। साड़ियों में पुष्प रूपांकनों का चयन पहनने वाले को इन फूलों के सार और उनके प्रतीकात्मक अर्थों को अपनाने की अनुमति देता है। ये कुछ सबसे लोकप्रिय और प्रिय डिज़ाइन हैं। "पुष्प जाल" एक अधिक विस्तृत संपूर्ण पुष्प डिज़ाइन है। सबसे लोकप्रिय डिज़ाइनों में से एक हैं और लालित्य और सुंदरता का प्रतीक हैं। चित्र



संख्या : 7 पुष्प आकृतियाँ

बूटी रूपांकन :

बूटी छोटे-छोटे आकृति लिए हुए होता है। इसके अलग-अलग पैटर्न दो या तीन रंगों के धागे की सहायता से बनाये जाते हैं और यदि पाँच रंग के धागों का प्रयोग किया जाता है तो इसे पचरंगा (जामेवार) कहा जाता है। यह साड़ी के लिए प्रमुख आवश्यक तथा महत्वपूर्ण डिजाइनों में से एक है। इससे साड़ी की जमीन या मुख्य भाग को सुसज्जित किया जाता है। जिसके लिए सिरकी (बौबिन) का प्रयोग किया जाता है। हालाँकि आजकल इसके लिए रेशमी धागों का प्रयोग किया जाता है जिसे मीना कहा जाता है जो रेशमी धागे से ही बनता है।



चित्र संख्या : 8 बूटी रूपांकन

बूटा रूपांकन :

जब बूटी की आकृति को बड़ा कर दिया जाता है तो इस बड़ी हुई आकृति को बूटा कहा जाता है। छोटे बड़े पेड़-पौधे जिसके साथ छोटी-छोटी पत्तियाँ तथा फूल लगे हों इसी आकृति को बूटे से उभारा जाता है। यह पेड़ पौधे भी हो सकते हैं और कुछ फूल भी हो सकते हैं। गोल्ड, सिल्वर या रेशमी धागे या इनके मिश्रण से बूटा काढ़ा जाता है। रंगों का चयन डिजाइन तथा आवश्यकता के अनुसार किया जाता है। बूटा साड़ी के बॉर्डर, पल्लु तथा आंचल में काढ़ा जाता है जबकि ब्रोकेड के आंगन (पोत) में इसे काढ़ा जाता है।



चित्र संख्या : 9 बूटा रूपांकन

कोनिया रूपांकन :

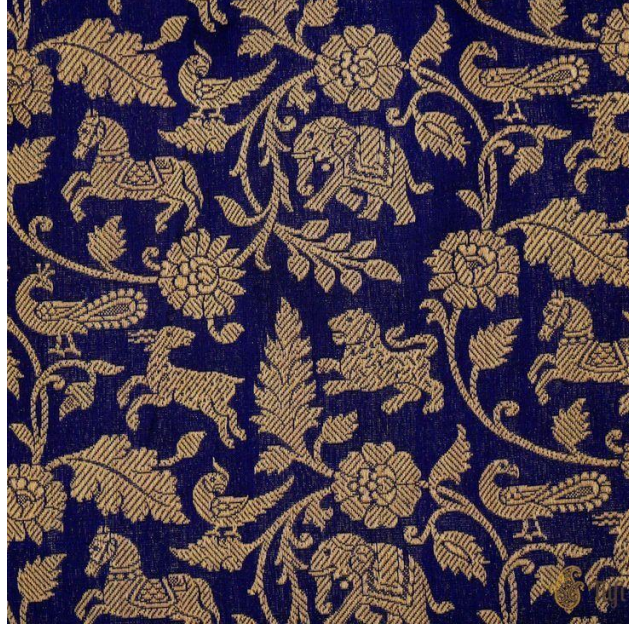
एक अन्य प्रमुख रूपांकन जो साड़ियों पर पाया जाता है वह कोनिया रूपांकन है। यह वस्त्रों के कोने में काढ़ा जाता है, डिज़ाइन आकृति को इस तरह से बनाया जाता है जिससे वे कोने के आकार में आसानी से आ सकें तथा बूटे से वस्त्र और अच्छी तरह से आलंकृत हो सकें। पल्लु डिज़ाइन के बाद, कोनिया बनाया जाता है जो कि प्रायः आम के आकार का रहता है जिसे बनाना बहुत कठिन होता है क्योंकि एक साथ इसमें तीन जालों से बुनाई की जाती है। ये डिज़ाइन सोने या चांदी के धागों का उपयोग करके बुने गए आम के आकार के बारीक रूपांकन हैं।^[8] ये समृद्धि और प्रचुरता का प्रतीक हैं। साड़ियों में बॉर्डर और पल्लू के बीच कोनिया रूपांकन दिखता है। यह एक पारम्परिक कला है। ये असाधारण रूप से सुंदर लगते हैं, जो साड़ी बुनाई उद्योग का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। ये रूपांकन साड़ी को और भी आकर्षण प्रदान करते हैं।



चित्र संख्या : 10 कोनिया रूपांकन

शिकारगाह रूपांकन :

शिकारगाह रूपांकन निर्विवाद रूप से मुगल कालीन वस्त्रों पर पाए जाने वाले अद्वितीय डिज़ाइन हैं। शिकार का मतलब शिकार करना होता है इसमें प्रकृति, पौधे, जानवर और विभिन्न अन्य तत्व शामिल हैं। ऐसी साड़ियाँ समृद्ध और भारी होती हैं क्योंकि वे शिकार के दृश्यों को चित्रित करती हैं। ऐसा माना जाता है कि इस तरह के रूपांकनों की शुरुआत फारस में हुई थी।



चित्र संख्या : 10 शिकारगाह रूपांकन

पक्षी रूपांकन :

पक्षी रूपांकन साड़ियों पर बनाए जाने वाले विशेष प्रकार के रूपांकन हैं। प्राचीन डिज़ाइनों में उड़ते हुए मोर और तोते को रूपांकनों के रूप में चित्रित किया गया था, हालाँकि, जैसे-जैसे कला विकसित हुई, अब समकालीन शैलियों में न्यूनतम पक्षी डिज़ाइन का उपयोग किया जाता है। आकर्षक पक्षी रूपांकन आधुनिक डिज़ाइन के हैं, लेकिन प्राचीन कढ़ाई बुनाई तकनीक का उपयोग करके उन्हें अधिक विशिष्ट और आकर्षक बनाया गया है।



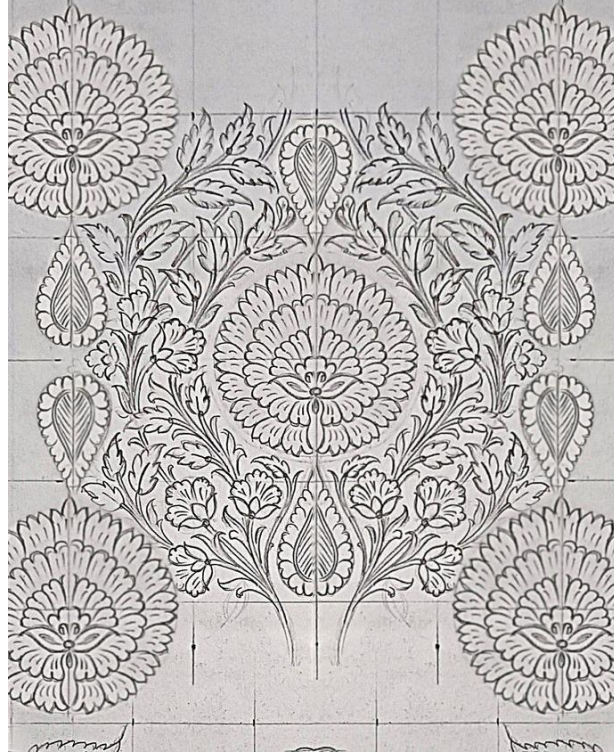
चित्र संख्या : 11 पक्षी रूपांकन

जाल –जंगला रूपांकन :

रूपांकनों को साड़ियों पर अब तक तैयार किए गए सबसे पुराने डिजाइनों में से एक माना जाता है। जाल, जैसे नाम से ही स्पष्ट होता है जाल के आकृति लिए हुए होते हैं। जाल एक प्रकार का पैटर्न/बंदिश है, जिसके भीतर बूटी बनाई जाती है तथा इसे जाल- जंगला कहते हैं। जंगला डिज़ाइन प्राकृतिक तत्वों से काफी प्रभावित है। जंगला कतान और ताना का प्लेन वस्त्र है। ताना-बाना कतान का रहता है और डिज़ाइन के लिए सुनहरी या चाँदी की ज़री का प्रयोग होता है जिसमें समस्त फूल, पत्ते, जानवर, पक्षी इत्यादि बने होते हैं। यदि जंगले में मीनाकारी करनी हो तो अलग अलग रंगों के रेशम के धागों का प्रयोग किया जाता है। इसी प्रकार बेल जंगला भी बनाया जाता है। उल्लेखनीय रूप से, "जंगला" शब्द का अर्थ "जंगल" है,[9] और इस रूपांकन के निर्माण का महत्व बुनाई की जटिलता में अत्यधिक निहित है।

पुष्प जाल रूपांकन :

बुनाई में सबसे पसंदीदा और पोषित रूपांकन पुष्प जाल डिज़ाइन है। दशकों से, पुष्प और पत्तेदार पैटर्न ने दुनिया भर में लाखों दिलों पर राज किया है। लेकिन पुष्प रूपांकनों का असली विकास मुगल काल में हुआ। मुगल राजा प्रकृति और फूलों के बड़े प्रशंसक माने जाते थे; हम इसे मुगल वास्तुकला और मूर्तिकला में परिलक्षित देख सकते हैं। जाल डिज़ाइन में पुष्प पैटर्न प्रेम, उर्वरता, खुशी, सौभाग्य और सफलता का प्रतीक हैं। जटिल रूप से बुने गए पुष्प रूपांकन परिष्कार, विचारशीलता और परिपक्व आकर्षण की विशेषता रखते हैं, और यह इसे लपेटने वाले व्यक्ति को एक ताज़ा सार देता है।



चित्र संख्या : 12 पुष्प जाल रूपांकन

झालर रूपांकन :

बॉर्डर के तुरंत बाद जहाँ कपड़े का मुख्य भाग जिसे अंगना कहा जाता है की शुरुआत होती है वहाँ एक खास डिज़ाइन वस्त्र को और अधिक अलंकृत करने के लिए दिया जाता है, जिसे झालर कहा जाता है। सामान्यतः यह बॉर्डर के डिज़ाइन से रंग तथा मैटीरियल में मिलता होता है। झालर में तोता, मोर, पान, कैरी, तिन पतिया, पाँच पतिया मोटिव डिज़ाइन बनाए जाते हैं।



चित्र संख्या : 13 झालर रूपांकन

मंगई/ आम की आकृति :

यह भारतीय पौराणिक कथाओं में एक प्रमुख स्थान रखता है। मुगल सम्राट जहांगीर और राजा अकबर जैसे भारत के प्रसिद्ध राजाओं ने कला को संरक्षण दिया है, और अपने महलों, गहनों और अपनी पोशाकों में आम की आकृति का उपयोग किया है। यह डिज़ाइन अत्यधिक लोकप्रिय हो गया, और यह साड़ी बुनाई में व्यापक रूप से उपयोग किए जाने वाले डिज़ाइनों में से एक बन गया। [10] समृद्धि, प्रचुरता और समृद्धि के प्रतीक के रूप में, आम की आकृति ने बुनाई उद्योग में अपना स्थान जीत लिया है। कच्चे आम की आकृति के बारे में अनोखी बात यह है कि अधिकांश साड़ियों में इसे कढ़वा तकनीक से बुना जाता है, जहां प्रत्येक आकृति को बहुत सटीकता और जटिलता के साथ अलग से बुना जाता है। आम की आकृति, जिसे पैस्ले या बूटा के नाम से भी जाना जाता है, आम उर्वरता, समृद्धि और प्रचुरता का प्रतीक है। यह जीवन की मिठास का प्रतिनिधित्व करता है और माना जाता है कि यह पहनने वाले के लिए सौभाग्य लाता है। साड़ियों को सजाने वाले जटिल और स्टाइलिश आम के रूपांकन लालित्य और आकर्षण का स्पर्श जोड़ते हैं।



चित्र संख्या : 14 मंगई/ आम की आकृति

बेल बूटी मोटिफ्स :

रेंगने वाली बेल की आकृति (बेल) की उत्पत्ति फारस में हुई, और यात्रा के दौरान, मुगलों ने इसे अपनाया क्योंकि यह समृद्ध मुगलई शैली में फिट बैठता था। फूलों, कलियों और फलों से लदे इसके पतले पत्तेदार सुडौल तनों ने बुनकरों को अविश्वसनीय पैटर्न बनाने के लिए प्रेरित किया है। प्रकृति से विशुद्ध रूप से कलात्मक, बूटी साड़ियों में पाया जाने वाला एक पुष्प रूपांकन है। इसमें एक छोटी बूटी और एक बड़ी बूटी को फूलों के रूप में दर्शाया जा सकता है। छोटी बूटी साड़ी पर बार-बार पंक्तियों में बुनी जाती है, जबकि बूटा को अंतिम टुकड़े के साथ पंक्तियों में बुना जाता है। बुटा या बूटी शब्द मूल रूप से फ़ारसी है,

लेकिन हिंदुओं के लिए इसका प्रतीकात्मक महत्व है और इसका उपयोग साड़ियों में व्यापक रूप से किया जाता है। बुनाई में, बेल बूटा रूपांकनों को सबसे पारंपरिक और क्लासिक पैटर्न में से एक माना जाता है। आश्चर्यजनक बेल बूटा रूपांकनों के साथ, बुनकर साड़ी में ज्यामितीय पैटर्न बनाते हैं, और बहु रंगों का उपयोग बेल बूटा पैटर्न को एक नया रूप देता है।



चित्र संख्या : 15 बेल बूटी मोटिफ्स

पुष्प बूटा मोटिफ्स :

कलात्मक रूप से पुष्प बूटा मोटिफ्स सबसे पुराने और बहुप्रशंसित डिजाइनों में से एक है। बुटों को सुनहरे या चांदी की ज़री या रंगीन धागों से बुना जाता है जो साड़ी के आधार पर एक कंट्रास्ट प्रदान करते हैं। जैसा कि हम सभी जानते हैं जब इस्लाम ने बुनाई में मानव और पशु आकृतियों के उपयोग को प्रोत्साहित नहीं किया था, जिसके कारण प्रमुख मुस्लिम बुनाई समुदायों के बीच फूलों की बुटियां, लताएं और जाली के प्रति अंतर्निहित पक्षपात पैदा हुआ था।[11] पुष्प बूटा रूपांकन फले-फूले और अभी भी सबसे प्रसिद्ध रूपांकनों में से एक



हैं।

चित्र संख्या: 16 पुष्प बूटा मोटिफ्स

ज़री का काम:

ज़री का काम, जटिल सोने और चांदी के धागे की कढ़ाई का एक रूप, परम्परिक साड़ियों की पहचान है। ज़री का उपयोग साड़ी में एक शानदार स्पर्श जोड़ता है और धन, ऐश्वर्य और समृद्धि का प्रतीक है। यह झिलमिलाते धागे प्रकाश को प्रतिबिंबित करते हैं और एक चमकदार प्रभाव पैदा करते हैं, जो साड़ी के रूपांकनों और समग्र डिजाइन की सुंदरता को बढ़ाते हैं।



चित्र संख्या: 17 ज़री का काम

अशरफी बूटी:

अशरफी बूटी पुराने सोने के सिक्कों से मिलते-जुलते सिक्के के आकार के रूपांकन हैं। जो साड़ी में परंपरा और इतिहास का एक स्पर्श जोड़ते हैं।

नये युग के समसामयिक रूपांकन :

हाथ से बुनी साड़ी जातीय मूल्यों और परंपराओं का प्रतीक है। इस अमर सुंदरता की विरासत ने साबित कर दिया है कि सच्ची कलात्मकता कभी नहीं मरती। यह समय के साथ विकसित होता है और सदैव जीवित रहता है। नए समसामयिक रूपांकन और पैटर्न इसके प्रमुख उदाहरण हैं। बुनकर आधुनिक रंगों और फैशन रुझानों के साथ नए बुनाई पैटर्न और रूपांकनों को अपना रहे हैं, और पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित ज्ञान और बुद्धिमत्ता यहाँ कि प्रामाणिकता को जीवित रखेगी। पैटर्न और बुनाई बदल गई है, लेकिन सदियों पुरानी बुनाई तकनीक अभी भी वही है। यह सिर्फ विविध बुनाई शैलियों का संयोजन नहीं है, यह राजशाही घरानों का संगम है।



चित्र संख्या : 18 समसामयिक रूपांकन

साड़ियाँ अपने उत्कृष्ट डिज़ाइन और जटिल रूपांकनों के लिए प्रसिद्ध हैं। लेकिन जैसा कि डिज़ाइन और पारंपरिक रूपांकनों की बहुमुखी प्रतिभा के कारण साड़ियाँ कभी भी फैशन से बाहर नहीं होती हैं। बुनी जाने वाली सबसे लोकप्रिय रूपांकन निम्नलिखित है।

पारंपरिक भारतीय वस्त्रों में उपयोग किए जाने वाले सबसे लोकप्रिय रूपांकनों और उनके प्रतीकात्मक उपयोग	
प्रतीक	अर्थ
शंख	ब्रह्मांडीय स्थान शक्ति,
रेंगने वाली लता	सौभाग्य, शक्ति
हाथी	उर्वरता, जीवन, शक्ति, पवित्रता
मछली	आध्यात्मिक शुद्धता
हंस	शक्ति, धन,
कमल	सुंदरता, शांति
कलश	सफलता, सौभाग्य
अम्बी या कैरी डिज़ाइन	उपजाऊपन
तोता	जुनून,
मोर	अमरता, प्रेमालाप

रुद्राक्ष	तपस्वी आकर्षण
सूरज	स्वास्थ्य

उपसंहार :

भारतीय वस्त्र डिजाइनों की शब्दावली बहुत समृद्ध है और वे अपनी समृद्ध विविधता, सुंदरता, लालित्य और कुशल शिल्प कौशल के लिए पूरी दुनिया में प्रसिद्ध हैं। भारतीय डिजाइन समृद्ध संस्कृति, परंपराओं और विरासत के संदर्भ हैं। साड़ी भारतीय परिधान का सबसे पहचाना जाने वाला रूप है। अपने शानदार सौंदर्य के कारण, यह शुरुआत से ही लोगों द्वारा पसंद की जाती रही है। विभिन्न रूपांकनों में जातीय, प्राकृतिक और शैलीगत डिजाइनों का मिश्रण दिखाई देता है। फैशन की दुनिया में हमेशा कुछ नया और कलात्मक होने की मांग रहती है। विभिन्न तकनीकों के साथ विभिन्न रूपांकनों का मिश्रण उन लोगों को एक कल्पनाशील और ताज़ा संग्रह प्रदान कर रहा है जो अपनी परंपरा को सूक्ष्म आधुनिकीकरण के साथ अपनाना चाहते हैं। डिजाइनों को अनुकूलित और बेहतर बनाने का मतलब है इसे इस तरह से संशोधित करना कि इसे बनाना आसान हो, उपयोग करना आसान हो, ठीक करना आसान हो या बनाए रखना आसान हो आदि। फैशन की बदलती दुनिया के साथ वस्त्र क्षेत्र अद्वितीय, अलग और नए डिजाइनों की मांग करता है जो हमें अनुकूलित पारंपरिक रूपांकनों का उपयोग करने का अवसर देता है। बुनकरों द्वारा तैयार किए गए सभी डिजाइन और उत्पाद तत्काल उपभोक्ताओं द्वारा पसंद किए जाते हैं। इससे लोक संस्कृति के संरक्षण में मदद मिलती है।

सन्दर्भ सूची:

- <https://hi.wikipedia.org/wiki>
- Shailaja D. Naik, Surface Designing of Textile Fabrics, indian textile motifs, page no-3-6
- Dr. Mohini Gupta, Priya and Arti Kumari, Adaptation and modification of different motifs for development of textile products using different techniques, ISSN: 2395-7476 IJHS 2023
- . Hood W, Wilson C. The literature of bibliometrics, Scientometrics, and informetrics. Scientometrics, 2001 Oct 1,306 -314.
- R.I. Verma, Silk Textile Industry in Uttar Pradesh with special reference to Mubarakpur, Azamgarh, Handicrafts Survey Monograph, No. 7, General Editor., P.P. Bhatnagar, Census of India, 1961, Vol. XV, Uttar Pradesh, Part VII A, Delhi, 1965, p. 1.
- Sonika Sandhu and Vijay Sathe, South Asian History, Culture and Archaeology, Vol. 3, No. 2, 2023, pno- 266
- Tarannum Fatma lari , Textile of Banaras (yesterday and today),Bharat kala bhawan bhu Varanasi ,page no-20
- के. चन्द्रमौली, आनंद कानन काशी, मुद्रक-पिल्ग्रिम प्रेस प्रा. लि., लालपुर, वाराणसी, ज्ञान प्रवाह, पृष्ठ संख्या 294

- Tarannum Fatma Iari , Textile of Banaras (yesterday and today), Bharat kala bhawan bhu Varanasi ,page no-188
- Sonika Sandhu and Vijay Sathe, South Asian History, Culture and Archaeology, Vol. 3, No. 2, 2023, pno- 135-141
- के. चन्द्रमौली, आनंद कानन काशी, मुद्रक-पिल्ग्रिम प्रेस प्रा.लि., लालपुर, वाराणसी, ज्ञान प्रवाह, पृष्ठ संख्या 289